पाकिस्तान में लोकतंत्र और राजनीतिक दल : एक विश्लेष्णात्मक अध्ययन

डॉ. दयाशंकर गुप्ता*

सारांश

पाकिस्तान अपनी स्थापना के बाद से ही एक ऐसा देश रहा है जो लोकतांत्रिक मूल्यों और लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्थापना के जद्दोजहद से अब तक उबर नहीं पाया है। देखा जाय तो पाकिस्तान में सच्चे अर्थों में लोकतंत्र कभी स्थापित ही नहीं हो पाया। पूरी दुनिया के लिए मुश्किल का सबब बने 'आतंकवाद का स्वर्ग' कहे जाने वाले इस देश में परोक्ष और अपरोक्ष सैन्य अधिनायकवाद का कायम रहना ही सबसे बड़ी समस्या है।

किसी भी देश में लोकतंत्र को पल्लवित और पुष्पित करने में राजनीतिक संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। खासकर राजनीतिक दल यदि पूरी जिम्मेदारी से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें तो देश में लोकतंत्र कभी विफल नहीं हो सकता। दुर्भाग्य से हमारे पड़ोसी देश में राजनीतिक दल अपनी इस जिम्मेदारी को समझने में नाकाम रहे।

प्रस्तुत शोध प्रपत्र इसी दिशा में पाकिस्तान के राजनीतिक दलों की भूमिका के विश्लेषण का एक प्रयास है कि किस तरह उनकी स्वार्थपरक तथा व्यक्तिगत महत्वकांक्षा केन्द्रित राजनीति ने देश में लोकतंत्र की जड़ों को बार बार कुंदित किया।

मुख्य शब्द– संविधान, दल, लोकतंत्र, सैन्य सत्ता, राजनीति, संस्थाएँ, संसद।

प्रस्तावना

लोकतंत्र के व्यावहारिक संचालन के लिए राजनीतिक दल आवश्यक होते हैं। वे लोकतंत्र के संचालन के लिए कई आवश्यक कार्य करते हैं। सैद्धान्तिक दृष्टि से लोकतंत्र ऐसी शासन प्रणाली है जिसका संचालन जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा होता है। यह कार्य दो प्रकार से होता है। प्रथम चरण में जनता मतदान द्वारा अपने प्रतिनिधियों का निर्वाचन करती है और दूसरे चरण में सरकार का निर्माण होता है, जो संसद के सहयोग से शासन चलाती है। इन दोनों ही चरणों में राजनीतिक दल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।[1] राजनैतिक दल राजनीतिक व्यवस्था की दशा और दिशा को निर्धारित करते हैं। वस्तुतः राजनीतिक दलों की कार्यशैली और व्यवहार विश्लेषण के आधार पर राजनीतिक व्यवस्था की परिपक्वता का अनुमान किया जा सकता है। पाकिस्तान की राजनीतिक व्यवस्था और दलीय प्रणाली भी इसका अपवाद नहीं है।

प्रस्तुत शोध पत्र ऐतिहासिक विश्लेष्णात्मक शोध पद्धति के माध्यम से पाकिस्तान के लोकतंत्र को मजबूत करने की दिशा में राजनीतिक दलों की भूमिका का एक विश्लेष्णात्मक प्रयास है।

1947 में पाकिस्तान की स्थापना और उसके बाद से ही जारी लोकतंत्र बनाम सैनिक शासन की अंतर्द्वन्द की पृष्ठभूमि में राजनीतिक व्यवस्था का विश्लेषण और भी अनिवार्य प्रतीत होता है। भारत और पाकिस्तान दोनों देशों में संसदीय शासन प्रणाली का आरोपण लगभग साथ–साथ किया गया था और दोनों ही राजनीतिक व्यवस्थाओं से यह अपेक्षा भी की गई थी कि ब्रिटिश संसदीय शासन प्रणाली से पूर्ण परिचित होने के कारण इस व्यवस्था का सुचारु रूप से कार्य संचालन संभव हो सकेगा।

जहाँ एक ओर कांग्रेस जैसे सशक्त राजनीतिक दल की छत्रछाया में भारतीय राजनीतिक व्यवस्था ने 26 नवम्बर 1949 को संविधान का निर्माण कार्य पूरा कर लिया। वहीं पाकिस्तान में संविधान के निर्माण में नौ वर्षों का लम्बा समय लगा और यह 1956 में ही निर्मित हो सका। एक ओर भारतीय राजनीतिक व्यवस्था वर्ष 1952 में ही प्रथम आम निर्वाचन करवाने में सफल हो गई वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान में दलीय आधार पर आम निर्वाचन 1970 में ही सम्पन्न हो सके।[2]

वस्तुतः मुस्लिम लीग साम्प्रदायिक आधार पर पाकिस्तान के निर्माण में तो सफल हो गई लेकिन एक राजनैतिक दल के रूप में वह पाकिस्तान की नवोदित राजनीतिक व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा न कर सकी और न ही पाकिस्तान के जनसामान्य की आकांक्षाओं पर खरी उतर सकी। वस्तुतः पूरा पाकिस्तान जातीय, धार्मिक, आर्थिक व कबीलाई स्तर पर विभिन्न समूहों में प्रारम्भ से ही बंटा रहा। फलस्वःप ऐसे में अधिकांश पाकिस्तानवासियों की निष्ठाएं मुस्लिम लीग के प्रति न रहकर अपने–अपने जातीय व धार्मिक समूहों के प्रति रही।

अपने निहित स्वार्थों के लिए पाकिस्तान के जातीय व धार्मिक नेताओं ने स्वयं को ही एक पार्टी के रूप में विकसित करना शुरू कर दिया और परिणामस्वरूप देश में शीघ्र ही राजनीतिक दलों की बाढ़ सी आ गई। पाकिस्तान में प्रारम्भिक वर्षों की प्रमुख पार्टियों में 'पाकिस्तान आवामी मुस्लिम लीग', 'आजाद पाकिस्तान पार्टी', 'सिंध आवामी महाज' विभिन्न प्रांतीय

* पूर्व पत्रकार, पी.टी.आई.(भाषा)

मुस्लिम लीग यथा 'पंजाब मुस्लिम लीग', 'उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत मुस्लिम लीग', 'सिंध मुस्लिम लीग', 'पूर्वी पाकिस्तान मुस्लिम लीग' प्रमुख थी।[3] इसके अतिरिक्त धार्मिक आधार पर 'जमाते–अल–इलमा ए इस्लाम', 'जमायत–अल–उलमा–ए पाकिस्तान प्रमुख रूप से शामिल थीं। ये अधिकांश पार्टियां व्यक्ति केन्द्रित थीं और इनका कोई सुदृढ़ आधार जनमानस में न था।

वर्ष 1948 में जिन्ना की असामयिक मृत्यु और वर्ष 1951 में प्रधानमंत्री लियाकत अली खान जैसे मशहूर व करिश्माई नेतृत्व की मृत्यु ने देश में राजनीतिक शून्य की स्थिति पैदा कर दी। इन महत्वपूर्ण नेताओं की मौत पाकिस्तान में दलीय पद्धति के विकास के लिए घातक सिद्ध हुई।

एक सुदृढ़ दलीय पद्धति के विकास की असफलता का परि.ााम अनिवार्य रूप से लोकतंत्र की विफलता के रूप में सामने आया। पाकिस्तान में संविधान सभा के गठन के साथ ही राजनीतिक षड्यंत्र शुरु हो गए। फलतः संविधान निर्माण में लगातार देरी होती गई और इस देरी का परिणाम राजनीतिक व्यवस्था की अस्थिरता के रूप में सामने आया।[4]

जब पाकिस्तान की संविधान सभा ने अपना कार्य लगभग पूरा कर लिया था, उसी समय प्रधानमंत्री मोहम्मद अली ने इस संविधान सभा को भंग कर दिया। पाकिस्तान की द्वितीय संविधान सभा ने जुलाई 1955 में कार्य शुरू किया और अंततः 29 फरवरी 1956 को पाकिस्तान ने अपना प्रथम संविधान अंगीकार कर लिया।[5] संसदीय लोकतंत्र का मूलभूत लक्षण कार्यपालिका का विधायिका के प्रति सामूहिक उत्तरदायित्व होता है, परन्तु इस मूलभूत दायित्व का निर्वहन कभी नहीं किया गया। साथ ही देश में आजादी के बाद बहुत सारी राजनीतिक पार्टियों का उदय होना घातक बन गया। 60 का दशक आते–आते पाकिस्तान में 87 से ज्यादा राजनीतिक दलों का अस्तित्व हो गया। किसी भी विकासशील देश के लिए बहुदलीय राजनीतिक व्यवस्था सामान्यतया घातक होती है।

पाकिस्तान में लोकतंत्र की परिणति अंततः 7 अक्टूबर 1958 को तानाशाही में हो गई।[6] 27 अक्टूबर 1958 को जनरल अयूब खाँ ने स्वयं को राष्ट्रपति व मुख्य मार्शल लॉ प्रशासक घोषित कर दिया।

जनरल अयूब ने 1956 के संविधान को सत्ता ग्रहण करते ही निलम्बित कर दिया और अब उनके इशारे पर संविधान निर्माण का कार्य उनके विश्वस्त सहयोगियों को सौंपा गया, फलतः एक नया संविधान 1962 में अस्तित्व में आया। इसी बीच अयूब द्वारा पार्टी गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाने से सारे देश में राजनीतिक गतिविधियां ठप सी पड़ गईं और इस दौरान विपक्षी दलों में एक हताशा सी बन गई।

वर्ष 1965 में भारत के साथ युद्ध में करारी हार के बाद वे देश में अलोकप्रिय हो गए इसका फायदा उठाते हुए अयूब के विदेशमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया।

भुट्टो ने अयूब के शासन के विरूद्ध प्रबल जनभावनाओं को देखते हुए एक नई पार्टी की स्थापना का निश्चय किया। 1 दिसम्बर 1967 को पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की विधिवत औपचारिक रूप से स्थापना की गई। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के प्रथम अधिवेशन में जुल्फिकार अली भुट्टो को निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया।[7]

जुल्फिकार अली भुट्टो ने पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के प्रथम अधिवेशन में देश भर से आए प्रतिनिधियों से लोकतंत्र की पुनर्स्थापना हेतु संघर्ष करने का आह्वान किया और विद्यमान सैनिक शासन की तीखी आलोचना की।

1970 के आम चुनाओं में इसे भारी सफलता मिली तथा 37.7 प्रतिशत वोट मिले। पश्चिमी पाकिस्तान के लिए घोषित 138 सीटों में से 81 सीटों पर इसने विजय हासिल की।[8]

20 दिसम्बर 1971 को भुट्टो पाकिस्तान के राष्ट्रपति बने और पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी सत्ता में आई। इस समय पाकिस्तान अनेक संकटों से जूझ रहा था। देश में आर्थिक संकट विकराल रूप धारण कर चुका था।

फलतः भुट्टो के नेतृत्व में देश की अर्थव्यवस्था में आधारभूत परिवर्तन लाने की कोशिशें की गईं। भुट्टो ने अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के कई प्रयास किये जैसे महत्वपूर्ण उद्योगों का राष्ट्रीयकरण, महत्वपूर्ण भूमि सुधार जिनमं भूमि की सिंचित व असिंचित काश्त की सीमा अधिकतम रूप से सुनिश्चित करना, देश के सभी अनुसूचित बैंकों का राष्ट्रीयकरण करना, कृषि क्षेत्र में सुधार, नई शिक्षा नीति की घोषणा तथा श्रम सुधार जैसे अनेक प्रयास किये गए। भुट्टो के शासन काल में वर्ष 1973 में पाकिस्तान का तीसरा संविधान स्वीकार किया गया।

भुट्टों ने जनता से वादा किया था कि वे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बहाल करेंगे परंतु उन्होंने अपने राजनैतिक विरोधियों को सबक सिखाने के लिए अनेक अनैतिक तरीके अपनाए। वर्ष 1975 के आरम्भ से ही विपक्ष ने भुट्टो के विरूद्ध जनआंदोलन छेड़ दिया व उनके नेतृत्व की वैधता पर प्रश्न चिह्न लगाते हुए देश में नए चुनाव करवाए जाने की मांग की। अंततः भुट्टो ने 7 जनवरी 1977 को घोषणा की कि राष्ट्रीय असेम्बली के चुनाव 7 मार्च 1977 को और प्रांतीय असेम्बलियों के लिए 10 मार्च 1977 को करवाए जाएंगे।[9]

भुट्टो द्वारा नेशनल असेम्बली को भंग करवाने के बाद अकस्मात् पाकिस्तान की 9 विपक्षी पार्टियों ने एक नया गठबंधन बनाया जिसे पाकिस्तान नेशनल एलायंस कहा गया। पाकिस्तान की नेशनल असेम्बली के लिए चुनाव 7 मार्च 1977

को सम्पन्न हुए और जब परिणाम मिलने शुरू हुए तो सम्पूर्ण देश आश्चर्य चकित रह गया क्योंकि मतदान के पूर्व यह माना जा रहा था कि पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी को इन चुनावों में करारी हार का सामना करना पड़ेगा। विपक्ष को अपनी आशाओं के विपरीत मात्र 36 सीटें ही मिल सकीं जबकि पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी को 155 सीटें मिलीं।[10]

पाकिस्तान नेशनल एलायंस ने चुनावों में व्यापक पैमाने पर धांधली का आरोप लगाते हुए पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की सरकार के विरूद्ध जन आंदोलन छेड़ दिया जिसमें उसे व्यापक रूप से सफलता मिली। भुट्टो ने जन आंदोलन को पुलिस अर्ध सैनिक बलों की सहायता से दबाने की चेष्टा की जिससे सम्पूर्ण देश में गृह युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई।

निरंतर बढ़ते तनावों को ध्यान में रखकर अंततः तत्कालीन सेनाध्यक्ष जनरल जिया उलह्क ने सैन्य विद्रोह द्वारा प्रधानमंत्री भुट्टो को हटाकर 5 जुलाई 1977 को सत्ता पर अधिकार कर लिया। इसी के साथ भुट्टो व पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के अन्य प्रमुख नेताओं को जेल में डाल दिया गया। बाद में हत्या के एक मुकदमे में जुल्फिकार अली भुट्टो को 4 अप्रैल 1979 को फाँसी पर लटका दिया गया। इसी के साथ पाकिस्तान की राजनीति में पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की भूमिका के एक अध्याय का पटाक्षेप हो गया।

पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी का दूसरा दौर

भुट्टो को फाँसी पर लटकाए जाने के बाद भी पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी ने अपनी जन संघर्ष की प्रवृत्ति को न छोड़ा। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी ने अब अपना लक्ष्य जनरल जिया के स्वेच्छाचारी शासन का विरोध करना बनाया। पाकिस्तान के प्रमुख विपक्षी दलों ने फरवरी 1981 में जनरल जिया के स्वेच्छाचारी शासन के विरूद्ध एक जोरदार आंदोलन शुरू किया और इसे 'लोकतंत्र की पुनर्बहाली के लिए आंदोलन' (एम.आर.डी.) नाम दिया।[11] इस आंदोलन को संचालित करने के लिए प्रमुख विपक्षी राजनीतिक दलों ने एक गठबंधन बनाया जिसमें पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी, मुस्लिम लीग (खैरूद्दीन ग्रुप), मुस्लिम कांफ्रेस, नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी, जमाते उलेमा पाकिस्तान, जमाते उलेमा इस्लाम, तहरीक–ए इश्तकाल इत्यादि शामिल थे। इस आंदोलन में पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के समर्थकों व छात्रों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आंदोलन को समाज के बुद्धिजीवी वर्गों यथा प्राध्यापकों, वकीलों, पत्रकारों तथा सरकारी कर्मचारियों व व्यवसायी वर्गों का जोरदार समर्थन हासिल था। इस आंदोलन की प्रमुख मांग देश में मार्शल लॉ की समाप्ति, पार्टी गतिविधियों पर लगे प्रतिबंध को हटाना, 1973 के संविधान की पुनर्बहाली, देश में नए आमचुनाव और जनरल जिया का इस्तीफा शामिल था।[12] आंदोलन के दौरान सम्पूर्ण पाकिस्तान में अभूतपूर्व प्रदर्शन हुए।

बाद में 17 अगस्त, 1988 को बहावलपुर के पास एक सैन्यविमान की दुर्घटना में जनरल जिया की मौत हो गई और इसी के साथ पाकिस्तान की राजनीति में एक नए अध्याय की शुरूआत हुई।[13] जनरल जिया की मौत के बाद गुलाम इसहाक खान देश के नए राष्ट्रपति बने।

राष्ट्रपति गुलाम इसहाक खान ने 16 नवम्बर और 19 नवम्बर 1988 को देश में नए आम चुनाव करवाए जाने की घोषणा की और राजनैतिक गतिविधियों पर लगा प्रतिबंध भी हटा लिया।[14]

वर्ष 1988 के चुनावों में मुख्य मुकाबला इस्लामी जम्हूरी इत्तेहाद नामक गठबंधन और जिया की विरोधी पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के बीच हुआ। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी का नेतृत्व इसकी युवा करिश्माई नेता बेनजीर भुट्टो व उनकी माँ बेगम नुसरत भुट्टो ने किया। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी ने अपने चुनावी घोषणा पत्र में सबसे मुख्य मुद्दा देश में लोकतंत्र की बहाली को बनाया।

एक लम्बे समय के बाद सम्पन्न हुए इन चुनावों में पाकिस्तान का कोई भी राजनीतिक दल बहुमत प्राप्त करने में सफल न हो सका। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी नेशनल असेम्बली की 205 सीटों में से 92 सीटें जीतने में सफल हुई।

1 दिसम्बर 1988 को पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की नेता बेनजीर भुट्टो को सरकार बनाने के लिए राष्ट्रपति गुलाम इसहाक खाँ ने आमंत्रित किया। सुश्री बेनजीर पाकिस्तान की सबसे युवा प्रधानमंत्री बनी और वे किसी भी मुस्लिम देश का नेतृत्व करने वाली प्रथम महिला थी। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की इस नवनिर्वाचित सरकार के समक्ष भी अनेक समस्याएं चुनौतियों के रूप में मौजूद थीं। देश की आर्थिक व्यवस्था असंतोषजनक थी, विभिन्न भागों में जातीय संघर्ष अपनी चरम सीमा पर थे। एक लम्बे समय से चले आ रहे तानाशाही व स्वेच्छाचारी शासन से जन सामान्य के मौलिक अधिकारों पर हो रहे आक्रमण को रोकना नव गठित सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती के रूप में उपस्थित थी। देश के सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार अपनी जड़ें जमा चुका था और ऋण का बोझ अर्थव्यवस्था पर बढ़ता जा रहा था। मुद्रास्फीति की उच्च दर जनसामान्य विशेषकर मध्यवर्ग और ग्रामीण कृषक वर्ग की मुश्किलें और भी बढ़ाने वाला कारक बनी हुई थी।[15]

बेनजीर भुट्टो ने जिनकी शिक्षा पश्चिम में हुई थी, प्रारम्भ में एक आधुनिक पाकिस्तान के निर्माण की कोशिशें कीं। उनका आधुनिकता की ओर स्पष्ट झुकाव था। उस समय तक पाकिस्तान में बेनजीर भुट्टो की तुलना में आधुनिक पाश्चात्य तौर तरीकों से वाकिफ अन्य कोई राजनीतिज्ञ न था।

जनरल जिया काल के कट्टरता के विपरीत बेनजीर की उपस्थिति पाकिस्तानी राजनीतिक व्यवस्था में सुखद बदलाव के रूप में देखी गई। बेनजीर भुट्टो के प्रति पाकिस्तानी जनता की अपेक्षा और उनकी सामाजिक स्वीकार्यता का प्रमाण यह तथ्य था कि पाकिस्तान की दुश्कर सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों में भी परम्परागत राजनीतिक ताकतें उन्हें पुनर्निर्माण का एक मौका देने को तैयार थीं। बेनजीर सरकार ने भी इन उम्मीदों पर उतरने की पूरी कोशिश की तथा सेना के साथ अपने सम्बन्ध अच्छे रखने के प्रयास किये परन्तु पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी का यह दूसरा दौर अकुशलता और नाकामी का ऐसा इतिहास रहा जिसके कारण उनकी सरकार दो दो बार बर्खास्त की गई।

निष्कर्ष

किसी भी लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक दलों का अस्तित्व बेहद महत्वपूर्ण होता है। राजनीतिक दलों का प्रमुख कार्य समाज के विभिन्न समूहों की मांगों और हितों का एकीकरण करना और उन्हें नीति निर्माण की प्रक्रिया में भागीदारी दिलाना होता है। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी ने 1967 में अपनी स्थापना के समय यह घोषित किया कि उसका प्रमुख लक्ष्य समाज के वंचित और दबे कुचले तबकों को सामाजिक न्याय दिलाना और विशेषकर पाकिस्तान की महिलाओं का जीवन स्तर ऊपर उठाना और उन्हें समाज में उचित भागीदारी दिलाना है।[16]

पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के जनक जुल्फिकार अली भुट्टो ने समाज के इन वंचित तबकों के हितों के लिए निरंतर संघर्ष किया फलतः वे 70 के दशक में एक नायक के रूप में उभरे। इसी कारण से पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी को अपनी स्थापना के मात्र तीन वर्षों के बाद ही 1970 में सम्पन्न प्रथम आम चुनावों में पश्चिमी पाकिस्तान में भारी सफलता प्राप्त हुई।[17] पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी ने अपने इस प्रथम कार्यकाल के दौरान अपने घोषित लक्ष्य समाजवाद की प्राप्ति के लिए विभिन्न आवश्यक कदम उठाए परंतु इनके अपेक्षित परिणाम न निकलने से पार्टी निरंतर अलोकप्रिय होती गई। 1977 का सैन्य विद्रोह पाकिस्तान की राज्य व्यवस्था के पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी से हुए मोहभंग का ही परिणाम था।

जनरल जिया के 10 वर्ष के लम्बे स्वेच्छाचारी शासन काल के दौरान पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी ने निरंतर जनता की भावनाओं को सैन्य शासन के विरूद्ध मुखरित करने का प्रयास किया। इस दौरान पार्टी ने दमन और उत्पीड़न के बावजूद अपने जुझारू रूख को बनाए रखा। 1988 में जब लोकतंत्र की पुनर्स्थापना हुई तो पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी का सबसे बड़ा राजनीतिक दल के रूप में उभरना, इसकी खोई हुई प्रतिष्ठा की वापसी का संकेत था और इस बात का भी कि पाकिस्तान की जनता का विश्वास फिर से उसके साथ जुड़ गया है।[18]

1988 से 1997 तक पाकिस्तान में संसदीय लोकतंत्र की दृष्टि से महत्वपूर्ण इन 9 वर्षों में पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी को दो बार सत्ता में आने का मौका मिला। एक राजनीतिक दल की दृष्टि से बार–बार सत्ता में आने का मौका मिलना सांगठनिक सफलता का आयाम माना जा सकता है, परन्तु पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी का कार्यकाल सफलता असफलता का ऐसा लेखा–जोखा रहा जिसमें असफलताओं का पलड़ा ही भारी था। अतः पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के कार्यकाल के इन 9 वर्षों के मूल्यांकन का प्रयास यह जानने के लिए महत्त्वपूर्ण है कि क्या यह पाकिस्तान के राजनीतिक भविष्य को किसी निर्णायक दिशा में मोड़ सकी?

1971 में जब पहली बार सैनिक शासन के बाद लोकतंत्र का आरोपण किया गया था तो पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की ही सरकार बनी थी और 1988 में जब एक बार फिर से लोकतंत्र की जड़े रोपी जाने के बाद पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी को ही इसे पल्लवित करने की जिम्मेदारी दी गई तो इतिहास की पुनरावृत्ति ही हुई। निःसंदेह चुनौतियाँ बहुत ज्यादा थीं और उनकी जड़ें गहरी पुरातन और ऐतिहासिक थी। सामाजिक संरचना की दृष्टि से और सांस्कृतिक दृष्टि से उनके मार्ग में इतनी बाधाएँ थीं कि शीघ्र सफलता की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। परेशान करने वाली आर्थिक असमताएं, बराबर उभरते रहने वाले परस्पर संहारक झगड़े, देश के अंदर प्राक् पूँजीवादी दबाव से प्रेरित दुर्गम खाईयां और विघटनकारी शक्तियां, बढ़ती हुई मुद्रास्फीति के सामने घुन की तरह लगी हुई घोर गरीबी, घटता उत्पादन, रोजगार के अवसरों में कमी और इन सबसे बढ़कर हत्याओं की राजनीति, नौकरशाही का असहानुभूति पूर्ण रूख और सेना व गुप्तचर विभाग का अधिकाधिक हस्तक्षेप जैसे तत्व पाकिस्तान की तत्कालीन राजनीतिक विरासत के केन्द्रीय प्रश्न थे। संरचनात्मक कारकों पर आधारित ये समस्याएं राजनीतिक परिदृश्य की बड़ी ही निराशाजनक तस्वीर पेश करती थी।

पाकिस्तान की किसी भी निर्वाचित सरकार के समक्ष घरेलू राजनीति की मुश्किलें व बाध्यतायें सबसे बड़ी चुनौती के रूप में हमेशा से सामने रही हैं। इन समस्याओं से निपटने में जरा सी भी चूक किसी भी निर्वाचित सरकार के लिए जीवन मरण का प्रश्न बन जाती है। दुर्भाग्य से अपने दोनों ही कार्य काल में बेनजीर भुट्टो ने इस तथ्य से अच्छी तरह परिचित होते हुए भी ऐसे अदूरदर्शिता पूर्ण कदम उठाए जिसने यह सुनिश्चित कर दिया कि उनकी सरकार और उनकी पार्टी दोनों ही राजनीतिक आत्मघात के लिए तत्पर हैं।[19]

बेनजीर के विशेषकर दूसरे कार्यकाल में पाकिस्तान के सीमावर्ती क्षेत्रों में धार्मिक कठमुल्लों, जिन्हें तालिबान की संज्ञा दी जाती थी, को सैन्य प्रशिक्षण दिया गया और इसी तालिबान मिलिशिया को आज आतंकवाद की पौधशाला के रूप में

जाना जाता है।[20] अर्थव्यवस्था पर पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की ढ़ीली पकड़ ने इसके क्षरण की प्रक्रिया को और भी तीव्र बना दिया। राष्ट्रपति ने जब 5 नवम्बर 1996 को बेनजीर सरकार बर्खास्त किया तो इसका सबसे बड़ा कारण उन्होंने आर्थिक अराजकता को ही बताया था जिसने देश को दीवालिएपन के कगार पर धकेल दिया था।[21]

बेनजीर की सरकार ने प्रारम्भ में यह वादा किया था कि उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता सार्वजनिक जनजीवन से भ्रष्टाचार का खात्मा होगा।[22] लेकिन वे खुद ही धीरे–धीरे इसमें पूरी तरह से संलिप्त होती गईं। बेनजीर सरकार ने भ्रष्टाचारियों को न्यायपालिका के शिंकजे से बचाने के लिए लगातार–न्यायपालिका के ऊपर हमले किए। जब राष्ट्रपति फारूख अहमद खान लेधारी ने बेनजीर को बर्खास्त किया तो उन्होंने सीधे आरोप लगाया कि बेनजीर सरकार न्यायपालिका की निष्पक्षता को सुनियोजित ढंग से खत्म करने की कोशिश कर रही है।[23]

पाकिस्तान में लोकतंत्र की कमजोरी का एक कारण विभिन्न आधारभूत संस्थाओं का दुर्बल होना रहा है। पाकिस्तान के दोनों ही प्रमुख राजनीतिक दल इन संस्थाओं को मजबूत बनाने की वकालत सैद्धान्तिक तौर पर तो करते रहे हैं परंतु व्यावहारिक दृष्टि से सत्ता में होने पर दोनों ने ही ऐसे कदम उठाए जिनसे इन संस्थाओं को और क्षति पहुँची। बेनजीर भुट्टो का न्यायपालिका के साथ टकराव इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। बनेजीर ने अपने द्वितीय कार्यकाल में न्यायपालिका को पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की ही राजनीतिक शाखा बनाने का प्रयास किया। उन्होंने न्यायाधीशों की नियुक्ति उनकी राजनीतिक प्रतिबद्धता के आधार पर करना शुरू किया। इससे लोकतांत्रिक व्यवस्था के आधार स्तम्भ के रूप में न्यायपालिका की भूमिका और भी कमजोर हुई।[24]

बेनजीर ने न्यायपालिका पर अनुचित दबाव डाले और न्यायाधीशों की आलोचना की। यह विरोधाभास ही था कि एक तरफ तो उन्होंने खुद ही न्यायपालिका की निष्पक्षता को दांव पर लगा दिया था और जब वे बर्खास्त की गई तो वे न्यायपालिका से यह उम्मीद कर रही थी कि वह उसी तरह उनकी सरकार को बहाल कर देगी जिस तरह उसने नवाज शरीफ की सरकार को बहाल किया था।[25]

वर्ष 1990 में जब बेनजीर सरकार बर्खास्त हुई थी, तो उन्होंने विवादास्पद आठवें संविधान संशोधन को निरस्त करने की जोरदार वकालत की। परंतु जब अपने प्रथम कार्यकाल में नवाज शरीफ ने उनसे इस मुद्दे पर समर्थन मांगा तो वे साफ मुकर गई। उनकी यह राजनीतिक अवसरवादिता बाद में फिर से उनके लिए घातक सिद्ध हुई। जब 1996 में दुबारा उनकी सरकार इसी प्रावधान का उपयोग करते हुए बर्खास्त कर दी गई।[26]

न सिर्फ सत्ताधारी दल के रूप में बल्कि प्रमुख विपक्षी दल के रूप में भी पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की भूमिका निराश करने वाली ही रही। बेनजीर ने प्रमुख विपक्षी नेता के रूप में नवाज शरीफ सरकार को उखाड़ फेकने के लिए समानांतर सत्ता केन्द्रों के तुष्टीकरण की जो अवसरवादी रणनीति अपनाई उससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया को और भी धक्का पहुँचा।

विपक्ष की नेता के रूप में बेनजीर के पास बेहतर मौका था कि लोकतंत्र बनाम समानांतर सत्ता केन्द्र के संघर्ष में वे लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत बनाने का प्रयास करती परंतु उनकी प्राथमिकता सैनिक जनरलों की तुष्टीकरण द्वारा उनसे अपने बिगड़े रिश्ते को मधुर बनाना रहा।[27] यहाँ तक कि नवाज शरीफ को परेशान करने के लिए वे सेना को हर उचित अनुचित अवसर पर आँख मूंदकर न केवल समर्थन देती रही बल्कि राजनीति में हस्तक्षेप को उचित ठहराती रही। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी को सत्ता प्रतिष्ठानों के अनुकूल ढालने का उनका यह प्रयास कितना अदूरदर्शितापूर्ण था यह उनके दूसरे कार्यकाल में सिद्ध हो गया।

परंतु इन नकारात्मक पहलुओं के बावजूद पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी ने पाकिस्तान की लोकतांत्रिक प्रक्रिया में एक सकारात्मक धारा भी उत्पन्न की। यह धारा द्विदलीय प्रणाली के उदय से सम्बन्धित थी। यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि किसी भी संसदीय लोकतांत्रिक पद्धति वाले देश में द्विदलीय प्रणाली को सर्वोत्तम माना जाता है क्योंकि यह देश में राजनैतिक स्थिरता उत्पन्न करने में सहायक होती है।

1993 के आम चुनावों के समय से ही पाकिस्तान में ऐसा माना जाने लगा कि देश में अब वास्तविक अर्थों में द्विदलीय प्रणाली आ गई है। वर्ष 1997 के आम चुनावों ने इन मान्यताओं की पुष्टि ही की। इस द्रष्टिकोण से पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी का योगदान पाकिस्तान के लोकतंत्र पर उसके तमाम नकारात्मक प्रभावों के बावजूद एक लोकतांत्रिक प्रक्रिया को स्थापित करने में निर्णायक रहा है।

हाल ही में पाकिस्तान की दलीय राजनीति में एक नया पहलू तब जुड़ा जब 18 अगस्त 2018 को 'इमरान अहमद खान नियाजी' ने पाकिस्तान के 22वें प्रधानमन्त्री के रूप में शपथ ली। इमरान खान की पार्टी 'तहरीक ए इंसाफ' के सत्ता आरोहण के साथ ही पाकिस्तान के अल्पजीवी लोकतंत्र में द्विदलीय संसदीय व्यवस्था के एक युग का भी अंत हो चुका है जो अभी तक पाकिस्तान मुस्लिम लीग (नवाज) तथा पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के इर्द गिर्द ही केन्द्रित थी। तहरीक–ए–इंसाफ
अभी तक पाकिस्तान मुस्लिम लीग (नवाज) तथा पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के इर्द गिर्द ही केन्द्रित थी। तहरीक–ए–इंसाफ
पार्टी पाकिस्तान की लोकतांत्रिक प्रक्रिया के लिए कितनी मुफीद साबित हुई, ये तो आने वाला समय ही बताएगा लेकिन जिस

तरह पार्टी की छवि तालिबान समर्थक तथा 'सेना के शिशु' की बनी हुई है उससे पाकिस्तान के लोकतंत्र को मजबूत करने की उसकी निष्ठा पर संदेह ही उठते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मॉरिस डुवर्जर, ''पॉलिटिकल पार्टीजः देअर ऑर्गनाइजेशन एण्ड एक्टिविटी इन द मॉडर्न स्टेट'', (लंदन, 1969, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस), पृ0स0 5–7
2. गुलाम डब्ल्यू चौधरी, ''पाकिस्तान ट्रांजिशन फ्राम मिलिट्री टू सिविलियन रूल'', (एसेक्स, 1988, स्कार्पियन पब्लिशर्स लिमिटेड), पृ0सं0 10
3. एम0रफीक अफजल, ''पॉलिटिकल पार्टीज इन पाकिस्तान : 1947–58'', (इस्लामाबाद, 1976, द नेशनल कमीशन ऑन हिस्टॉरिकल एण्ड कल्चरल रिसर्च), पृ0सं0 87–90
4. चौधरी, पूर्व उद्घृत सं0–2, पृ0सं0 19–20
5. गुलाम डब्ल्यू चौधरी, ''कांस्टिट्यूशनल डेवलपमेंट इन पाकिस्तान'', (लंदन, 1959, लांगमैन ग्रुप) पृ0सं0 95
6. मोहम्मद असगर खान, ''जनरल्स इन पालिटिक्स : पाकिस्तान 1958–1982'', (नई दिल्ली, 1983, विकास पब्लिशर्स), पृ0सं0 6
7. वीरेन्द्र ग्रोवर द्वारा सम्पादित, ''इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सार्क नेशंस'' (पाकिस्तान सीरीज), (नई दिल्ली, 1997, दीप एण्ड दीप पब्लिशर्स), पृ0सं0 352
8. गोपीनाथ, पूर्व उद्घृत सं0–17, पृ0सं0 91–92
9. सुरेन्द्रनाथ कौशिक, ''पाकिस्तान अंडर भुट्टोज लीडरशिप'', (जयपुर, 1985, आलेख पब्लिशर्स), पृ0सं0 92–93
10. एम0 जी0 वेनबॉम, ''द मार्च सेवेंटी सेवन इलेक्शंस इन पाकिस्तान'' : व्हेयर एव्री वन लॉस्ट'', एशियन सर्वे, नं0–2, जुलाई 1977, पृ0सं0 136–37
11. मोहम्मद असगर खान, ''जनरल्स इन पॉलिटिक्स : पाकिस्तान 1958–82'', (नई दिल्ली, 1983, विकास पब्लिशिंग हाऊस), पृ0 सं0 168
12. उपरोक्त, पृ0सं0–169
13. श्रीधर, जॉन कानियालिल तथा सविता पाण्डे द्वारा सम्पादित, ''पाकिस्तान आफ्टर जिया'' (नई दिल्ली, 1989, ए0बी0सी0, पब्लिशिंग हाऊस), पृ0सं0–77
14. कलीम बहादुर तथा उमा सिंह द्वारा सम्पादित, ''पाकिस्तान ट्रांजिशन टू डेमोक्रेसी'', (दिल्ली, 1989, पैट्रियाट पब्लिशर्स), पृ0सं0 6–7
15. वीना कुकरेजा, ''रेस्टोरेशन ऑफ डेमोक्रेसी इन पाकिस्तान : वन इयर ऑफ बेनजीर्स रूल'', स्ट्रेटेजिक ,नालिसिस, नई दिल्ली, वॉल्यूम नं0 11, फरवरी 1990, पृ0सं0 1168–70
16. मीनाक्षी गोपीनाथ, ''पाकिस्तान इन ट्रांजिशन'' (दिल्ली, 1975, मनोहर बुक सर्विस), पृ0सं0 28–29
17. उपरोक्त, पृ0सं0 91–92
18. जॉन कानियालिल, ''पाकिस्तान 1988 इलेक्शन'', स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, नई दिल्ली, वॉल्यूम गपप फरवरी 1989, पृ0सं0 1318–19
19. महेश भारद्वाज, ''बेनजीर भुट्टो : फेलियर ऑफ लीडरशिप'', वीरेन्द्र ग्रोवर द्वारा सम्पादित इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सार्क नेशंस (पाकिस्तान सीरीज), (नई दिल्ली, 1997, दीप एण्ड दीप पब्लिशर्स), पृ0सं0 447–48
20. जाहिद हुसैन, ''पाकिस्तान : धर्मांधता की आँधी'', इण्डिया टुडे, 15 मार्च 1995, पृ0सं0 66
21. राबर्ट लापोर्ट, ''पाकिस्तान इन 1996'', एशियन सर्वे, वाल्यूम नं0 2, फरवरी 1997, पृ0सं0 199
22. नेशन (लाहौर), 26 नवम्बर 1996
23. द न्यूज (इस्लामाबाद), ''टेक्स्ट ऑफ द डिसोल्यूशन आर्डर'', 5 नवम्बर 1996
24. लापोर्ट, पूर्व उद्धृत सं0–16, पृ0सं0 180
25. श्रीधर, पूर्व उद्धृत सं0–17, पृ0सं0 29
26. हिन्दुस्तान टाइम्स (नई दिल्ली), 22 दिसम्बर 1996
27. शफाकत, पूर्व उद्घृत सं0–8, पृ0सं0 662–63